विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

युवाओं में विश्वास जगाती सरकार की पहल

युवाओं को रोजगार सबसे ज्यादा ज्वलंत मुद्दा होता है और राजस्थान की सरकार ने इस दिशा में सकारात्मक पहल करते हुए साल के पहले माह में ही पूरे साल का सरकारी कार्यालयों की भरती का कैलेण्डर जारी कर युवाओं को सकारात्मक संदेश दे दिया है। नौकरियों की तलाश में जुटे युवाओं को सालाना कैलेण्डर जारी होने से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियां करना आसान हो जाएगी क्योंकि उन्हें पहले से ही मालूम हो सका है कि किस माह में किन–किन सरकारी नौकरियों के लिए भर्ती परीक्षाएं आयोजित होगी। सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि सरकार द्वारा भर्ती एजेंसियों के माध्यम से एक लाख पदों पर भर्ती की जाएगी। इसमें सभी तरह के पद शामिल किए गए हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की युवाओं के भविष्य के प्रति सोच का ही परिणाम है कि सरकार ने साल भर में भरे जाने वाले एक लाख पदों की भर्ती ना केवल सुनिश्चित कर दी अपितु सभी एक लाख पदों को भरने का सालाना कैलेण्डर जारी करके सरकार की मंशा को स्पष्ट कर दिया है। सबसे खास बात यह है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार द्वारा युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए भर्ती प्रक्रिया में कामकाज संभालते ही ध्यान देना शुरु किया और लगातार भर्ती प्रक्रिया जारी रखने के साथ ही समय समय पर कार्यक्रम आयोजित कर नियुक्ति पत्र दिए जाते रहे हैं। इससे युवाओं में एक सकारात्मक संदेश भी जाता है। अन्यथा इससे पहले जिस तरह से एक के बाद एक भर्ती प्रक्रियाएं लगातार प्रश्नों के घेरे में आती रही है और हालात यहां तक पहुंच गए कि भर्ती करने वाली संस्थाएं खासतौर से राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन की विश्वसनियता ही सवालों के घेरे में खड़ी हो गई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा पूर्ववर्ती सरकार के दौरान भर्ति परीक्षाओं में व्यापक स्तर पर हुई गड़बड़ियों और युवाओं के भविष्य को देखते हुए तत्काल एसओजी के हवाले जांच कराने के बाद एक के बाद एक नित नए कारनामें और नाम उजागर होने लगे हैं। भर्ती परीक्षाओं में इस तरह की धांधलियां जहां युवाओं में घोर निराशा का कारण बनती गई वहीं सरकार की विश्वसनीयता भी संदेह के घेरे में आ गई। इस बात के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उनकी सरकार की तारीफ करनी होगी कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में एक भी भर्ती परीक्षा संदेह के घेरे में नहीं आई। इससे युवाओं में भी विश्वास जमा है और वे यह मानने लगे हैं कि उनके साथ कसी तरह का छलावा नहीं होगा। परीक्षाओं को लेकर जो अविश्वास का कोहरा छाया था वह भी धीरे धीरे छट गया है।

युवाओं के भविष्य के प्रति सरकार की चिंता और गंभीरता इसी से स्पष्ट हो गई है कि सरकार ने भर्तियों का मासिक कैलेण्डर जारी कर दिया है। इसके साथ ही सरकार ने युवाओं के हित की अनेक रोजगारपरक कौशल विकासपरक नीतियां लागू कर दी है। स्टार्टअप्स को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे में युवाओं को भी भविष्य को दिशा देने के प्रयास करने चाहिए।

युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं हो सकता। होना भी नहीं चाहिए। कितनी मेहनत से युवा नौकरी के लिए परीक्षा की तैयारी में जुटता है और फिर परीक्षा के बाद जब पेपर आउट होने या अन्य तरह की गलत गतिविधियों के कारण पूरी परीक्षा व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगता है तो युवा किस मानसिकता से गुजरते हैं वह कल्पना से परे की बात है। परीक्षाओं में शुचिता अनिवार्य मांग है और उसे परीक्षा कराने वाली संस्था को बनाए रखना ही चाहिए। जिस तरह से आरपीएससी संदेह के घेरे में आई और जिस तरह से आरपीएससी के सदस्य के कारनामें उजागर हुए उससे ना केवल युवाओं के सपने नष्ट हुए अपितु सरकार की फजीहत में भी कोई कमी नहीं रही। इसके साथ ही मेहनती और जरुरतमंद युवाओं पर तो एक तरह से आकाशीय बिजली गिरने जैसे हालात ही हो गए। हांलाकि इस तरह के घटनाएं कई प्रदेशों में हुई पर जिस तरह से राजस्थान की साख खराब हुई वह अपनेआप में गौर करने लायक रही है।

साल की शुरुआत में ही प्रतियोगी परीक्षाओं का कैलेण्डर जारी कर दिया जाता है तो युवाओं को किस परीक्षा में बैठना है और किस तरह की तैयारी करनी है उसका समय रहते रोडमैप तैयार हो जाता है। इसके अलावा युवाओं में एक विश्वास बनता है कि सरकार द्वारा इस साल इतने पदों के लिए भर्ती की जाएगी। प्यरीक्षा का संभावित समय भी पूर्व निर्धारित होता है तो फिर इससे परीक्षा की तैयारी करना भी आसान हो जाता है। इसके साथ ही पक्ष–विपक्ष का भर्ती करने नहीं करने के विवाद का भी कोई मायना नहीं रह जाता है।

प्रतियोगी परीक्षा के साथ ही उसकी पारदर्शिता महत्वपूर्ण हो जाती है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार परीक्षाओं की शुचिता व पारदर्शिता को लेकर युवाओं में विश्वास जमाने में सफल रही है। अब प्रतियोगी परीक्षाओं की आयोजन संस्थांए चाहे वह आरपीएससी हो या अधीनस्थ भर्ती बोर्ड दोनो को भी अपनी विश्वसनीयता कायम करने और कायम रखने के ठोस प्रयास करने होंगे। क्योंकि जिस तरह से इन संस्थाओं के अस्तित्व और गरिमा को बनाएं रखने पर खास ध्यान देना होगा। सरकार ने अपना काम कर दिया है। युवाओं के भविष्य के प्रति सरकार की चिंता और गंभीरता इसी से स्पष्ट हो गई है कि सरकार ने भर्तियों का मासिक कैलेण्डर जारी कर दिया है। इसके साथ ही सरकार ने युवाओं के हित की अनेक रोजगारपरक कौशल विकासपरक नीतियां लागू कर दी है। स्टार्टअप्स को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे में युवाओं को भी भविष्य को दिशा देने के प्रयास करने चाहिए। जो युवा अपने कौशल को स्वरोजगार, एमएसएमई या लघु घरेलू उद्योग लगाने में रुचि रखते है तो उन्हें सरकारी नौकरी के स्थान पर एंटरप्रोन्योर बनने की दिशा में भी प्रयास करने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 15 जनवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र शुक्रवार प्रातः 5:48 तक, वृद्धि योग रात्रि 8:38 तक, तैतिल करण रात्रि 8:17 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य–मकर, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–धनु, बुध–धनु, गुरू–मिथुन, शुक्र–मकर, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज मंगल मकर राशि में रात्रि 4:28 से प्रवेश करेगा। आज थल सेना दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:17 से 12:36 तक, लाभ–अमृत 12:36 से 3:13 तक, शुभ 4:32 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:51

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में आज शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

सिंह
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक मामलों में परिजनों से सहयोग/परामर्श मिल सकता है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

धनु
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

"मकर संक्रांति" सूर्य संवत्सर का सबसे पावन महत्वपूर्ण दिन

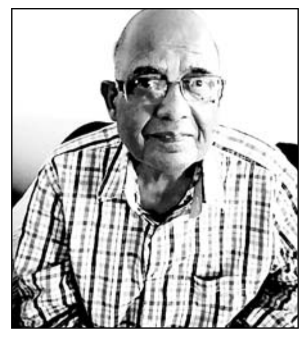

डॉ. जे.के. गर्ग

सूर्य को भारत के ऋषि मुनियों ने निर्विवाद रूप से जड़ चेतन की आत्मा माना है। भारतीय काल चक्र सूर्यकी गति के मुताबिक ही चलता है। सूर्य का संक्रमन लगातार काल प्रवाह का परिचायक है। भारत में सोर संवत्सरको राष्ट्रिय मान्यताप्रदान की गई है वहीं सोर संवत्सर का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण दिन मकर संक्रान्ति को माना गया है। संक्रांति का मतलब है सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में गमन करना। मकर संक्रांति के दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि के अंदर प्रवेश करता है। इसी वजह से इस संक्रांति को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक इस दिन सूर्य अपने पुत्र शनि की राशि में प्रवेश करते हैं, वैसे तो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य व शनि में शत्रुता बताई गई है लेकिन इस दिन पिता सूर्य स्वयं अपने पुत्र शनि के घर जाते हैं तो इस दिन को पिता पुत्र के तालमेल और प्रेम मिलाप के दिन और पिता–पुत्र में नए संबंधों की शुरुआत के दिन के रूप में भी देखा गया है।

पुराणों के अनुसार भगवान राम के पूर्वज एवं मां गंगा को धरती परलाने वाले राजा भगीरथ ने इसी दिन अपने पूर्वजों का तिल से तर्पण किया था और तर्पणके बाद गंगा इसी दिन सागर में समा गई थी और इसलिए इस दिन गंगासागर में मकरसंक्रांति के दिन विशाल धार्मिक मेला भरता है। मकरसंक्रान्तिके पावनदिन पर लाखों न्र नारी गंगासागर में स्नान करके पुण्य लाभप्राप्त करते हैं। मकर संक्रांति के दिन ही दिन भगवान विष्णु ने असुरों का संहार करके असुरों के सिर को मंदार पर्वत पर दबा कर युद्ध समाप्ति की घोषणा कर दी थी। इसलिए मकर संक्रांति को बुराई पर अच्छाइयों और असत्य पर सत्य के रूप में मनाते हैं। मकर संक्रांति को नकारात्मकता को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा की शुरुआत के रूप में भी मनाया जाता है।

इस साल मकर संक्रांति 14 और 15 जनवरी को मनाई जाएगी। सोर संवत्सर में मकरसंक्रांति में सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण तक का सफर अत्यंत महत्वपूर्ण है। मान्यता के मुताबिक सनातन धर्मी हिन्दू सूर्य के उत्तरायण काल में ही शुभ कार्य करते हैं। सूर्य जब मकर, कुंभ, वृष, मीन, मेष और मिथुन राशि में रहता है तब इसे उत्तरायण कहते हैं। वहीं, जब सूर्य बाकी राशियों सिंह, कन्या, कर्क, तुला, वृश्चिक और धनु राशिमें रहता है, तब इसे दक्षिणायन कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन देवताओं की रात होती है। जितने समय में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगाती है उसी अवधि को सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी का गोलाई में सूर्य के चारों ओर घूमना क्रान्ति चक्र कहलाता है। इस परिधि चक्र को बाँटकर बारह राशियाँ बनी हैं। सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना संक्रान्ति कहलाता है। मकर संक्रांति के दिन यज्ञ में दिया हव्य को ग्रहण करने के लिए देवता धरती परअवतरित होते हैं। मकर संक्रांति का त्यौहार सम्पूर्ण सृष्टि के लिए ऊर्जा के स्त्रोत भगवान सूर्य की आराधना के रूप में मनाया जाता है।

उत्तरायण में इसी मार्ग से पुण्यात्माएँ शरीर छोड़कर स्वर्गआदि लोकों में प्रवेश करती हैं। सनातन धर्म की मान्यताओं के मुताबिक इस दिन पुण्य, दान, जपत था धार्मिक अनुष्ठानों का अत्याधिक महत्त्व है और इस दिन किये गये दान पुन्य से उन्हें सौ गुणा ज्यादा फल प्राप्त होता है। ऐसा माना जाता है कि सूर्य के उत्तरायण में आने पर सूर्य की किरणें पृथ्वी पर पूरी तरह से पड़ती है और यह प्रथ्वी प्रकाशमय हो जाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार 21–22 दिसंबर के आसपास से ही दिन का बढ्ना शुरू होता हैं।

इसलिए वास्तविक शीतकालीन संक्रांति 21 दिसंबर या 22 दिसंबर जब उष्णकटिबंधीय रवि मकर राशि में प्रवेश करती है इसलिए वास्तविक उत्तरायण 21दिसंबर को होता है। यही मकर संक्रांति की वास्तविक तारीख भी थी। एक हजार साल पहले मकरसंक्रांति 31 दिसंबर कोमनाया गया था वर्तमान समय में साधारणतया 14जनवरी को मकर संक्रांति बनाई जाती है। वैज्ञानिक गणनाओं के अनुसार पांच हजार साल बाद मकर संक्रांति का पर्व फरवरी के अंत तक हो सकता है, जबकि 9000 वर्षों बाद में यह जून में आ जाएगा।

खगोलीय अवधारणा के मुताबिक सूर्य के धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करने को मकर संक्रांति कहा जाता है। दरअसल हर साल सूर्य का धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश 20 मिनट की देरीसे होता है। इस तरह हर तीन साल के बाद सूर्य एक घंटे बाद और हर 72 साल एक दिन की देरी से मकर राशि में प्रवेश करता है। इस तरह 2080 के बाद मकर संक्रांति 16 जनवरी को पड़ेगी। इसी संदर्भ यह उल्लेखनीय है कि राजा हर्षवर्धन के समय में यह पर्व 24 दिसंबर को पड़ा था। मुगल बादशाह अकबर के शासन काल में 10 जनवरी को मकर संक्रांति थी। शिवाजी के जीवन काल में यह त्योहार 11 जनवरी को पड़ा था। मकर संक्रांति के दिन भारत के प्रमुख तीर्थस्थलों यथा प्रयाग, हरिद्वार, वाराणसी, कुरुक्षेत्र, गंगासागर, पुष्कर आदि में पवित्र नदियों गंगा, यमुना आदि में करोडों लोग डुबकी लगा कर स्नान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि वरुण देवता इन दिनों में यहां आते हैं। यह भी माना जाता है कि उत्तरायण में देवता मनुष्य द्वारा किए गए हवन,यज्ञ आदि को शीघ्रता से ग्रहण करते हैं। अथर्ववेद में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि दीर्घायु और स्वस्थ रहने के लिए सूर्योदय से पूर्व ही स्नान शुभ होता है। ऋग्वेद में ऐसा लिखा है कि हे सूर्योदय से पूर्व ही स्नान करने से भास्कर देव हमारे वात, पित्त और कफ से पैदा होने वाले रोगों को समाप्त करते हैं। मकर संक्रांति माघ माह में आती है। संस्कृत में मघ शब्द से माघ निकला है। मघ शब्द का अर्थ होता है धन, सोना–चांदी, कपड़ा, आभूषण आदि इसलिए इन वस्तुओं के दान आदि के लिए ही माघ माह उपयुक्त है। ईसी वजह से मकर संक्रांति को माघी संक्रांति भी कहते है।

मकर संक्रांति को देश में कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे तिल संक्रांति, खिचड़ी संक्रांति एवं माघ संक्रांति। पंजाब और जम्मू कश्मीर मे संक्रांति के एक दिन पूर्व में लोहड़ी मनाई जाती है। लोग घर–घर जाकर लकडि़यां एकत्रित करते हैं और फिर लकड़ियों के समूह को आग के हवाले कर मकई की खील, तिल व रेवड़ियों को अग्नि देव को समर्पित करके प्रसाद के रूप में सबमें बाटते हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार में मकर संक्रांति को 'खिचड़ी' के नाम से मनाया जाता है।

इन प्रदेशों के अंदर कहीं खिचड़ी बनाई जाती है तो कहीं जगह दही चूड़ा और तिल के लड्डू बनाए जाते हैं। मध्य प्रदेश में इस त्योहार पर परिवार के बच्चों से लेकर बूढ़े सभी एक साथ गिल्ली–डंडे के इस खेल का आनंद उठाते हैं। महाराष्ट्र और गुजरात में मकर संक्रांति के दिन लोग अपने घर के सामने आकर्षक रंग बिरंगी रंगोली अवश्य बनाते हैं। फिर एक–दूसरे को तिल–गुड़ खिलाते हुए आपस में कहते हैं तिल और गुड़ खाओ और फिर हमेशा मीठा–मीठा बोलो। असम में माघ महीने की संक्रांति के पहले दिन से माघ बिहूयानि भोगाली बिहू पर्व मनाया जाता है। भोगाली बिहू के मौके पर खान–पान धूमधाम से होता है। इस समय असम में तिल, चावल, नरियल और गन्ने की फसल अच्छी होती है। इसी से तरह–तरह के व्यंजन और पकवान बनाकर खाये और खिलाये जाते हैं।

भोगाली बिहू पर भी होलिका जलाई जाती है और तिल व नरियल से बनाए व्यंजन अग्नि देवता को समर्पित किए जाते हैं। भोगली बिहू के मौके पर टिकुली भोंगा नामक खेल खेला जाता है साथ ही भैंसों की लड़ाई भी होती है।

राजस्थान, गुजरात में संक्रांति को पंतग बाजी के पर्व के रूप में मनाया जाता है राजस्थान,गुजरात मे इस दिन आसमान पतंगो से ढक जाता है। लाल, हरी, नीली, पीली आदि रंग बिरंगी पतंगें जब आसमान में लहराती हैं तोऐसा लगता है मानो इन पतंगों के साथ हमारे सपने भी हकीकत की ऊँचाइयों को छू रहे हैं और हम सभी सारे गिले–शिकवे भूलकर एक–दूसरे की पतंगों के पेच लड़ा रहे हैं। केरल में भगवान अयप्पा की निवास स्थली सबरीमाला की वार्षिक तीर्थयात्रा की अवधि मकर संक्रांति के दिन ही समाप्त होती है, जब सुदूर पर्वतों के क्षितिज पर एक दिव्य आभा 'मकर ज्योति' दिखाई पड़ती है। कर्नाटक में भी फसल का त्योहार शान से मनाया जाता है।

बैलों और गायों को सुसज्जित करने की शोभायात्रा निकाली जाती है। नये परिधान में सजे नर–नारी, ईख, सूखा नारियल और भुने चने के साथ एक–दूसरे का अभिवादन करते हैं। मकर संक्रांति फसलों की कटाई का त्यौहार नई फसल और नई ऋतु के आगमन के तौर पर भी मकर संक्रांति धूमधाम से मनाई जाती है। पंजाब, यूपी, बिहार समेत तमिलनाडु में यह वक्त नई फसल काटने का होता है, इसलिए किसान मकर संक्रांति को आभार दिवस के रूप में मनाते हैं।

खेतों में गेहूं और धान की लहलहाती फसल किसानों की मेहनत का परिणाम होती है लेकिन यह सब ईश्वर और प्रकृति के आशीर्वाद से संभव होता है। मकर संक्रांति से प्राप्त सुखी जीवन के नुस्खे मकर संक्रान्ति का पर्व हमे अपनी जिन्दगी को सुखी और खुशहाल बनाने के बारे में अप्रत्यक्ष रूप के अंदर अनेको सीख भी देता है। सूर्य आकाश में बहुत ऊँचाई पर है इसीलिये हमे भी जीवन के अंदर कुछ बड़ा काम करने के लिये हमकोऊची और बड़ी सोच रखनी होगी। सूर्य कीरोशनी से प्राप्त उजाला हमको सीख देता है कि ज्ञान से प्राप्त की गई सोच से हमारी सोच के अंदर स्पष्ट नजरिया उत्पन्न होता है जो हमें सफलता दिलाता है। संक्रांति के बाद मौसम मे बदलाव आता है और हमारे खान पान मे भी हम बदलाव करते है इससे सीख मिलती हैकि परिस्थिति में आए परिवर्तन के अनुसार हमें अपने–अपने को ढाल लेना चाहिये। परिवर्तन को स्वीकार करना लाजमी और फायदेमंद होता है। अपनी लीडरशिप क्षमता को कामयाब बनाने के लिये हमारी बोली में मिठास और विनम्रता का होना जरूरी है।

पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक मकर संक्रांति के दिन दिन सूर्य अपने पुत्र शनि की राशि में प्रवेश करते हैं,वैसे तो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य व शनि में शत्रुता बताई गई है लेकिन इस दिन पिता सूर्य स्वयं अपने पुत्र शनि के घर जाते हैं तो इस दिन को पिता पुत्र के तालमेल और प्रेम मिलाप के दिन के दिन व पिता पुत्र में गुजरे दुश्मनी पूर्ण संबंधों की बजाय नये प्रेममय रिश्तों की शुरुआत होती है। इससे हमको यह सीख मिलती है कि हमें अपने जीवन मे आपसी रिश्तों को मजबूत बनाये रखना चाहिए यही सबसे बड़ी पूर्जी होती है। शुभ कामो की शुरुआत करने मे देरी नहीं करें। जीवन के अंदर जीत हार को अनावश्यक महत्व नहीं दें याद रखे एक असफलता दूसरी सफलता का दरवाजा खोलती है। सिर्फ सोचने से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा आपको अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिये मेहनत करनी पड़ेगी।

–डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज
डा जे. के. गर्ग

भारत में नववर्ष मनाने के नए ट्रेंड ने दुनिया को चौंकाया, पाश्चात्य की राह छोड़, आध्यात्म की ओर मुड़े लोग

मिश्रीलाल पंवार

इस वर्ष पूरे भारतवर्ष में नववर्ष मनाने के ट्रेंड ने पूरी दुनिया को चौंका दिया है। देश विदेश के लोग इस चैंज को सनातन के तेजी से बढ़ते प्रभाव के रूप में देख रहे हैं। यह पहला मौका था जब भारतीय जनमानस का बड़ा हिस्सा यकायक पाश्चात्य संस्कृति की तर्ज पर नववर्ष मनाने की बजाय आध्यात्म की ओर मुड़ता दिखा है। इस वर्ष भारत के हर तीर्थ स्थल पर नववर्ष मनाने वालों का सैलाब उमड़ पड़ा था। नए साल की शुरुआत आस्था और भक्ति के साथ करने के लिए बड़ी संख्या में लोग तीर्थ स्थलों पर पहुंचे और देवी–देवताओं के दर्शन–पूजन कर सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। मंदिर परिसरों में सुबह से ही हर–हर महादेव,जय श्रीहरि, जय माता दी और जय बजरंगबली के साथ ही वाहेगुरु के जयकारे गूंजते रहे। हांलांकि कुछ लोगों ने पाश्चात्य परम्परा से भी नववर्ष मनाया, मगर ऐसे लोगों की संख्या इस बार बहुत कम रही। तीर्थ या धाम पर पर नववर्ष मनाने के बाद वापस लौट लोगों ने बताया कि तीर्थ पर जाकर भगवान के साथ नववर्ष मनाने का अद्भुत व अनोखा अनुभव रहा। जीवन में पहली बार परिवार के साथ देवदर्शन कर नववर्ष मनाया। इसमें अलग ही आनंद की अनुभूति हुई। उसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता।

वैसे तो भारत के हर तीर्थ स्थल पर लोगों की भीड़ बनी रही मगर अयोध्या पहुंच कर भगवान राम के साथ नववर्ष मनाने का उत्साह चरम पर रहा। रामनगरी में अयोध्या में नव वर्ष 2026 की पहली सुबह भक्ति, विश्वास और उल्लास के रंग में रंगी नजर आई। नया साल लगते ही रामलला के दर्शन की अभिलाषा लेकर श्रद्धालुओं का जनसैलाब सरयू तट से लेकर श्रीराम जन्मभूमि मंदिर और हनुमानगढ़ी तक उमड़ पड़ा।धैर्य के साथ अपने आराध्य के दर्शन करते दिखे। कहीं भजन–कीर्तन की स्वर लहरियां थीं तो कहीं दीप–धूप के साथ आरती की दिव्यता ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। प्रशासनिक अफसरों की मानें तो इस दौरान नववर्ष मनाने आठ लाख से अधिक श्रद्धालु व पर्यटक अयोध्या पहुंचे।

नए सपनों, संकल्पों के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की नगरी में लोगों ने नए साल के पहले दिन का दिल खोलकर स्वागत किया। भोर से ही मंदिरों के कपाट खुलते ही जय श्रीराम के उद्घोष गूंज उठे। भीड़ का सर्वाधिक दबाव रामलला के दरबार और हनुमानगढ़ी में रहा। घंटों कतार में खड़े रहकर भी श्रद्धालुओं का उत्साह कम नहीं हुआ।

इसी तरह हरिद्वार, काशी–विश्वनाथ, जगन्नाथ पुरी, प्रयागराज, माता वैष्णोदेवी मंदिर, महाकालेश्वर, सोमनाथ, द्वारका, पावागढ़, स्वर्ण मंदिर, भीमाशंकर, ओंकारेश्वर, रामेश्वरम, मदुरै, उज्जैन, नासिक, मथुरा–वृंदावन, तिरुपति और शिरडी सहित देश के हर तीर्थ स्थल पर नववर्ष मनाने वालों का सैलाब उमड़ पड़ा। नव वर्ष 2026 के नववर्ष आगमन पर अल सुबह से ही गयाजी शहर और आसपास के प्रमुख मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली। असम के गोहाटी में स्थित शक्ति पीठ कामख्या धाम पर भी लोगों की भारी भीड़ बनी रही।गुजरात के श्यामलाजी मन्दिर पर भी लोगों की अभूतपूर्व भीड़ रही।

राजस्थान भी इससे अछूता नहीं रहा। चुरू स्थित सालासर बालाजी मंदिर में भी श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी गई। यहां रात एक बजे मंदिर के पट खोले गए और दर्शन की अनुमति दी गई। खाटू श्यामजी मंदिर के कपाट खुले रखे गए ताकि श्रद्धालु निरंतर दर्शन कर सकें। यहां दस लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने नववर्ष मनाते धोंक लगाई। पुलिस ने लोगों की भारी भीड़ को देखते हुए अतिरिक्त कर्मियों की तैनाती के साथ सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए हैं। रिंगस तथा खाटू के बीच 17 किलोमीटर के क्षेत्र को दो जनवरी तक वाहन निषेध क्षेत्र घोषित किया गया। जयपुर के गोविन्द देवजी के मन्दिर में भी भारी भीड़ बनी रही।

चित्तौड़गढ़ में स्थित सांवरिया सेठ मंदिर पर श्रद्धालु सुबह चार बजे से ही पहुंचने लगे, वहीं बांसवाड़ा के त्रिपुरा सुंदरी मंदिर में भी श्रद्धालुओं की लगातार भीड़ देखी गई।

इसी तरह, सवाई माधोपुर में हजारों श्रद्धालु त्रिनेत्र गणेश मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे। जिससे मंदिर तक जाने वाली सड़क पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। पुष्कर भी अछुता नहीं रहा। लोग अलग सुबह ही पुष्कर सरोवर में स्नान कर ब्रह्मा जी के मंदिर के दर्शन को पहुंचने शुरू हो गए। जो लोग तीर्थ स्थलों पर नहीं पहुंच पाए, वे अपने ही शहर के मन्दिरों पर पहुंचे तथा भगवान के दर्शन कर नववर्ष मनाया।

प्रतापनगर स्थित हनुमान शनिधाम के गाधिपति गोपाल महाराज का कहना है कि यह क्रांति यकायक नहीं आई है। देश के संतों की इसमें प्रमुख भूमिका रही है। पिछले कुछ समय में वृन्दावन के महान संत प्रेमानंद महाराज, देवकीनंदन ठाकुर, अनिरुद्धाचार्य महाराज, बागेश्वर धाम के श्री धीरेन्द कृष्ण शास्त्री, श्री रामभद्राचार्य महाराज, श्री इन्द्रेश उपाध्यक्ष तथा नीम करोली बाबा जैसे प्रखर संत महात्माओं ने सनातनी हिन्दूओं का जगाने में बहुत मेहनत की है। ये सभी संत महात्मा भारत संस्कृति के संवाहक है।

-मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर,
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार है)

मांडलगढ़ : बुजुर्ग भगवत सिंह के जुनून ने बंजर ज़मीन को बना दिया हरा–भरा जंगल

माण्डलगढ़, (निसं)। जहां लोग पेड़ काटकर ज़मीन को बंजर बना देते हैं, वहीं एक 62 वर्षीय बुजुर्ग भगवत सिंह (लाला बना) ने अपने जुनून, मेहनत और पर्यावरण प्रेम से बंजर भूमि को हरे–भरे जंगल में तब्दील कर दिया। यह प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जुड़ाव ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल भी है। माण्डलगढ़ उपखण्ड क्षेत्र के सुरास ग्राम पंचायत के नाहरगढ़ गांव के बाहर सड़क किनारे वर्षों से भूमि पूरी तरह से बंजर पड़ी थी। न पानी था, न हरियाली और न ही हरियाली के कोई आसार थे। वर्ष 2021 में पर्यावरणप्रेमी नाहरगढ़ निवासी लाला बना ने बनास नदी के बजरी लीजधारक को प्रेरित कर बंजर पड़ी करीब 50 बीघा भूमि में तारबंदी कराई और पौधरोपण कराया। करीब एक साल बाद बजरी लीज अवधि समाप्त होने से चारागाह में पौधे सूखने लगे और उजाड़ होने लगा। नाहरगढ़ के रहने वाले बुजुर्ग लाला बना ने चारागाह की दुर्दशा को देख इसे विकसित करना अपनी ज़िंदगी का उद्देश्य बना लिया। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने अकेले ही फल एवं फूलदार, छायादार करीब 2500 पौधे का पौधरोपण किया। ख़ुद के निजी टैंकर से दूर से पानी लाकर पौधों की पिलाई कर प्रतिदिन देख–रेख कर परवरिश की। शुरुआत में लोगों ने बुजुर्ग का मज़ाक उड़ाया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। लगातार मेहनत, नियमित देखभाल और प्राकृतिक तरीकों से संरक्षण का नतीजा यह रहा कि आज वही बंजर भूमि हजारों पेड़ों और पौधों से लहलहा रही है। जंगल

भगवत सिंह

में पक्षियों की चहचहाहट लौट आई है, वन्य जीवों की भी आवाजाही बढ़ने लगी है और आसपास के क्षेत्र का पर्यावरण संतुलन बेहतर हुआ है।

स्थानीय लोगों के अनुसार बुजुर्ग पिछले कई 5 वर्षों से प्रतिदिन सुबह–शाम पौधों की देखभाल करते रहे। उन्होंने वर्षा जल संरक्षण, प्राकृतिक खाद और देसी बीजों का उपयोग कर जंगल को विकसित किया। आज यह जंगल क्षेत्र के लिए ऑक्सीजन का बड़ा स्त्रोत बन गया है। इस वर्ष विकसित चारागाह के जंगल को उन्नत बनाने के लिए बोरिंग मोटर पंप के साथ ड्रिप सिस्टम का सिंचाई संयंत्र स्थापित किया गया हैं, जो प्रत्येक पौधे ओर पेड़ के तने में नियमित जलापूर्ति कर रहा हैं। इस विकसित चारागाह में विधायक गोपाल खण्डेलवाल, माण्डलगढ़ एसडीएम मनमोहन शर्मा, पुलिस उपाधीक्षक एवं पर्यावरणप्रेमी बाबूलाल विश्नोई के साथ कई लोगों ने पौधरोपण कर पर्यावरण बढ़ाने में भागीदारी निभाई हैं।

■ 50 बीघा एरिया के पेड़ पौधों की सिंचाई के लिए बोरिंग मोटर पंप के साथ ड्रिप सिंचाई संयंत्र लगाया

पर्यावरण प्रेमी लाला बना का कहना है कि विकसित चारागाह में पेड़–पौधों के साथ मवेशियों के हरि एवं सूखी घास भी उपलब्ध हो रही है, जो पशुपालन में उपयोग की जा रही है।

पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि यह पहल साबित करती है कि यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो एक व्यक्ति भी बड़ा बदलाव ला सकता है। प्रशासन के अधिकारियों और सामाजिक संगठनों ने बुजुर्ग लाला बना के कार्य की सराहना करते हुए इसे जनआंदोलन बनाने की बात कही है।